श्रीविष्णु सहस्रनाम

प्रार्थना

श्रीविष्णुसहस्त्रनामसहित

प्रार्थना

संकलित

प्रकाशक

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-२२१००१

सारी प्रार्थनाओं का सार यही है कि हम अपने-अपने दिलों में ईश्वर को बसा लें।

हर साँस के साथ राम-नाम (खुदा का नाम) निकले, इस स्थिति को पहुँचने पर प्रार्थना का आदर्श सिद्ध होता है। आत्मदर्शन और आत्मशुद्धि के लिए प्रार्थना से मदद मिलेगी।

-मो. क. गांधी

विनय

हे जग-त्राता विश्व-विधाता,

हेसुख-शान्ति-निकेतन हे ।

प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो,

दु:ख-दारिद्र-विनाशन हे ।

नित्य, अखण्ड, अनन्त, अनादि ,

पूरण ब्रह्म,सनातन हे ।

जग-आश्रय, जगपति, जग-वन्दन ,

अनुपम,अलखनिरंजन हे ।

प्राण-सखा, त्रिभुवन-प्रतिपालक ,

जीवनके अवलम्बन हे ।

सेवक की प्रार्थना

हे नम्रता के सागर !

दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी !

गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित

इस सुन्दर देश में

तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे ।

हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे;

तेरी अपनी नम्रता दे;

हिन्दुस्तान की जनता से

एकरूप होने की शक्ति और उत्कण्ठा दे ।

हे भगवन्! तू तभी मदद के लिए आता है,

जब मनुष्य शून्य बनकर, तेरी शरण लेता है ।

हमें वरदान दे, कि सेवक और मित्र के नाते

जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं,

उससे कभी अलग न पड़ जायँ ।

हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना, ताकि,

इस देश को हम ज्यादा समझें और ज्यादा चाहें ।

-मो. क. गांधी

प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्म-तत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम् ।
यत्स्वप्न-जागर सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्फलम् अहं न च भू-संघः ॥१॥

प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्तिनिखिला यद् अनुग्रहेण ।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अग्र्यम ॥२॥।

प्रातर् नमामितमसः परम् अर्क-वर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन् इदं जगद् अशेषम् अशेष-मूर्तो
रज्ज्वांभुजंगम् इव प्रतिभासितं वै ॥३॥

समुद्र-वसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले ! ।
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम्; पाद-स्पर्शं क्षमस्व मे ॥४।।

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ॥५॥

वक्र-तुण्ड !महाकाय ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ ! ।
निर्विघ्न कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ॥६॥

गुरुर् ब्रह्मा, गुरुर् विष्णुः ; गुरुर् देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म; तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥७॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्म-नाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघ-वर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम्
वन्दे विष्णु भव-भय-हरं सर्व-लोकैक-नाथम् ॥८।।

कर-चरण-कृतं वाकू-कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।

विहितम् अविहितं वा सर्वम् एतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव ! शम्भो ! ॥९॥

न त्वहं कामये राज्यम् न स्वर्ग नापुनर्भवनम् ।
कामये दु:ख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्ति-नाशनम् ॥१०॥

स्वस्ति प्रजाभ्य: ; परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशा: ।
गो-ब्राह्मणेभ्य: शुभम् अस्तु नित्यम् ;
लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु ॥११।।

नमस्तेसतेते जगत्-कारणाय
नमस् ते चितेसर्व-लोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय
नमो ब्रह्मणेव्यापिने शाश्वताय ॥१२॥

त्वम्एकंशरण्यं त्वम् एकं वरेण्यम्
त्वम् एकं जगत्-पालकंस्व-प्रकाशम् ।

त्वम् एकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् एकंपरंनिश्चलं निर्विकल्पम् ॥१३॥

भयानांभयं; भीषणंभीषणानाम्
गति: प्राणिनां;पावनं पावनानाम् ।

महोश्चैः पदानांनियन्तृ त्वम् एकम्
परेषां परं; रक्षणं रक्षणानाम् ॥१४॥

वयं त्वांस्मरामो; वयं त्वांभजामो
वयं त्वां जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
सद् एकंनिधानं निरालम्बम् ईशम्
भवाम्भोधि-पोतंशरण्यं व्रजामः ॥१५।।

•

(संस्कृत)

प्रात:कालीन प्रार्थना

ॐ पूर्णम् अद: पूर्णम् इदम्
पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय
पूर्णम् एव अवशिष्यते ॥
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥

ईशावास्योपनिषद्

१. ॐ ईशावास्यम् इदं सर्वं
यत् किं च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:
मागृध: कस्यस्विद् धनम् ॥

२. कुवर्नन् एव इह कर्माणि
जिजीविषेत् शतं समा: ।
एवं त्वयि न अन्यथा इत: अस्ति
न कर्म लिप्यते नरे॥

(हिन्दी)

प्रात:कालीन प्रार्थना

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह ,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा ।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

ईशावास्योपनिषद्

१. हरि; ॐ ईशु का आवास यह सारा जगत्,
जीवन यहाँ जो कुछ उसीसे व्याप्त है।
अतएव करके त्याग उसके नाम से
तू भोग कर उसका, तुझे जो प्राप्त है।
धन को किसीके भी न रख तू वासना ।

२.करते हुए ही कर्म इस संसार में
शत वर्ष का जीवन हमारा इष्ट हो।
तुझ देहधारी के लिए पथ एक यह ,
अतिरिक्त इससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्म से,
उससे चिटकती मात्र फल की वासना ।

३. असुर्या: नाम ते लोका:
अन्धेन तमसा आवृता: ।
तांस् ते प्रेत्य अभिगच्छन्ति
ये के च आत्महन: जना: ॥

३. मानी गयी हैं योनियाँ जो आसुरी
छाया हुआ जिनमें तिमिर घनघोर है ,
मुड़ते उन्हीं की ओर मरकर वे मनुज ,
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञान के ।

(संस्कृत) (हिन्दी)

४. अनेजद् एक मनस: जवीय:
न एनद् देवा: आप्नुवन् पूर्वम्
अर्षत् ।
तद् धावत: अन्यान् अत्येति तिष्ठत्
तस्मिन् अप: मातरिश्वा दधाति ॥

४. चलता नहीं, फिरता नहीं, है एक ही
वह आत्मतत्त्व सवेग मन से भी अधिक ,
उसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
उनको कभी का वह स्वयं ही है धरे ।
वह उन सभी को, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह 'है', तभी तो संचरित है प्राण यह
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृति की गोद में ।

५. तद् एजति तत् न एजति
तद् दूर तद् उ अन्तिक ।
तद् अन्तरस्य सर्वस्य
तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यत: ॥

५. वह चल रहा है, और वह चलता नहीं ,
वह दूर है, फिर भी निरंतर पास है।
भीतर सभी के बस रहा सर्वत्र ही ,
बाहर सभी के है तदपि वह सर्वदा।

६. य:तु सर्वाणि भूतानि
आत्मनि एव अनुपश्यति ।
सर्वभूतेषु च आत्मानं
ततः न विजुगुप्सते ।।

६. जब जो निरन्तर देखता है, भूत सब
आत्मस्थ ही हैं और आत्मा दीखता
सम्पूर्ण भूतों में जिसे, तब वह पुरुष
ऊबा किसी के प्रति नहीं रहता कहीं ।

७. यस्मिन् सर्वाणि भूतानि
आत्मा एव अभूद् विजानत: ।
तत्र क: मोह: क: शोक:
एकत्वम् अनुपश्चत: ।।

७. वे सर्वभूत हुए जिसे हैं आत्ममय ,
एकत्व का दर्शन निरन्तर जो करे,
तब उस दशा में उस सुधीजन के लिए
कैसा कहाँ क्या मोह, कैसा शोक क्या ?

(संस्कृत) (हिन्दी)

८. स: पर्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम्
अस्त्राविरं शुद्धम् अपापविद्धम् ।
कविर् मनीषी परिभू: स्वयंभू:
याथातथ्यत: अर्थान् व्यदधात्
शाश्वतीभ्य: समाभ्य: ।।

८. सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ को
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता उसे –
जो तेज से परिपूर्ण है, अशरीर है ,
यों मुक्त है तनु के व्रणादिक दोष से ,
त्यों स्नायु आदिक देहगुण से भी रहित –
जो शुद्ध है, वेधा नहीं अघ ने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतन्त्र
सब अर्थ उसके सध गये हैं ठीक से ,
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन काल में ।

९. अन्धं तम: प्रविशन्ति ये
अविद्याम् उपासते ।
तत: भूय: इव ते तम:
ये. उ. विद्यायां रता: ॥

९. जो जन अविद्या में निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में ।
जो मनुज विद्या में सदा रममाण हैं ,
वे और घन तमसान्ध में मानो धँसे ॥

१०. अन्यद् एव आहुर् विद्यया
अन्यद् आहुर् अविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां
ये नस् तद् विचचक्षिरे ॥

१०. वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्या से कथित ,
एवं अविद्या से कथित है भिन्न वह ।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना ,
जिनसे हुआ उस तत्त्व का दर्शन हमें ॥

११. विद्यां च अविद्यां च
यस् तद् वेद उभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा
विद्यया अमृतम् अश्नुते ॥

११.विद्या, अविद्या इन उभय के साथ में
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को ,
इसके सहारे तर अविद्या से मरण
वे प्राप्त विद्या से अमृत करते सदा ॥

(संस्कृत) (हिन्दी)

१२. अन्धं तम: प्रविशन्ति ये
असंभूतिम् उपासते ।
तत: भूय: इव ते तम:
ये उ संभूत्यां रता: ॥

१२. जो मनुज करते हैं निरोध-उपासना,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में ।
जो जन सदैव विकास में रममाण हैं ,
वे और घन तमसान्ध में मानो धँसे ॥

१३. अन्यद् एव आहु: संभवाद्
अन्यद् आहुर् असंभवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां
ये नस् तद् विचचक्षिरे ।।

१३.वह आत्मतत्त्व विकास से है भिन्न ही
कहते उसे एवं विभिन्न निरोध से।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना ,
जिनसे हुआ उस तत्त्व का दर्शन हमें ॥

१४. संभूतिं च विनाशं च
वस् तद् वेद उभयं सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा
संभूत्या अमृतम् अश्नुते ॥

१४. ये जो विकास-निरोध, इन दो के सहित
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को ,
इसके सहारे मरण पैर निरोध से
पाते सदैव विकास के द्वारा अमृत ॥

१५. हिरण्यमयेन पात्रेण
सत्यस्य अपिहितं मुखम् ।
तत् त्वं पूषन्
अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।।

१५. मुख आवरित है सत्य का उस पात्र से
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो ,
मुझ सत्यधर्मा के लिए वह आवरण
तू दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूँ ॥

(संस्कृत) (हिन्दी)

१६. पूषन् एकर्षे यम सूर्य,
प्राजापत्य, व्यूह रश्मीन् समूह ।
तेज: यत् ते रूपं कल्याणतमं तत् ते
पश्यामि
य: असौ असौ पुरुष: स: अहम् अस्मि॥

१६. तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक
एक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर
रहा ,

पालन सभी का हो रहा तुझसे प्रजा की भाँति
है
निज पोषणादिक रश्मियाँ तू खोलकर
मुझको दिखा
फिर से दिखा एकत्र त्यों ही जोड़ करके तू
उन्हें ।
अब देखता हूँ रूप तेरा तेजयुत
कल्याणतम,
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूँ वही ॥

१७. वायुर अनिलम् अमृतम्
अथ इदम् भस्मान्तं शरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर कृत स्मर
क्रतो स्मर कृतं स्मर ॥

१७. यह प्राण उस चेतन अमृतमय तत्त्व में
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो ।
ले नाम ईश्वर का अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर ,
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे ।

(संस्कृत) (हिन्दी)

१८. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोधि अस्मद् जुहुराणम् एन:

१८. हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्त्व जो जग में ग्रथित ।
ले जा परम आनन्दमय की ओर तू

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥

ऋजु मार्ग से, हमको कुटिल अघ से बचा ।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे ।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे ।

ॐ पूर्णम् अद: पूर्णम् इदम्
पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय
पूर्णम् एव अवशिष्यते।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

ॐ पुर्ण है वह पुर्ण है यह ,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल ,
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

सायंकालीन प्रार्थना

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यै स्तवैर्
वेदै: साङ्गपदक्रमोपनिषदै: गायन्ति यं सामगा: ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम: ॥

सायंकालीन प्रार्थना

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यै स्तवैर्
वेदै: साङ्गपदक्रमोपनिषदै: गायन्ति यं सामगा: ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम: ॥

(संस्कृत) (हिन्दी)

स्थितप्रज्ञ-लक्षण

अर्जुन उवाच

१. स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधी: किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम् ॥

भगवान् उवाच

२. प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मनि एव आत्मना तुष्ट: स्थितप्रज्ञ: तदा उच्यते ।।

३. दुःखेषु अनुद्विग्नमना: सुखेषु विगतस्पृह: ।
वीतरागमयक्रोध: स्थितधी: मुनि: उच्यते ॥

४. य: सर्वत्र अनभिस्नेह: तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
न अभिनन्दति न द्वेष्टि तथ्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।

स्थितप्रज्ञ-लक्षण

अर्जुन ने कहा :

१. स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता ।

श्री भगवान् ने कहा :

२. मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो ,
आपमें आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी ।

३. दुःख में जो अनुद्विग्न, सुख में नित्य निःस्पृह ,
वीतराग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही ।

४. जो शुभाशुभ को पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रजा है उसकी स्थिरा ॥

५. यदां संहरते च अयं कूर्म: अङ्गानि
इव सर्वशः ।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेभय: तस्य प्रज्ञा
प्रतिष्ठिता ।।

५. कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को
समेट ले ,
सर्वश: विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी
स्थिरा ।

(संस्कृत) (हिन्दी)

६. विषय: विनिवर्तन्ते निराहारस्य
देहिन: ।
रसवर्ज रस: अपि अस्य परं दृष्ट्वा
निवर्तते ॥

६. भोग तो छूट जाते हैं निराहारी
मनुष्य के ,
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है
आत्म-लाभ से ।

७. यतत: हि अपि कौन्तेय पुरुषस्य
विपश्चित: ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं
मन: ॥

७. यत्नयुक्त सुधी की भी इन्द्रियाँ ये
प्रमत्त जो ,
मन को, हर लेती हैं अपने बल से
हठात्।

८. तानि सर्वाणि संयम्य युक्त: आसीत
मत्पर: ।
वशे हि यस्य इन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा
प्रतिष्ठिता ।।

८. इन्हें संयम से रोके, मुझीमें रत, युक्त
हो,
इन्द्रियाँ जिसने जीतीं, प्रज्ञा है उसकी
स्थिरा ।

९. ध्यायत: विषयान् पुंस:
सङ्गः तेषु उपजायते।
सङ्गात् सञ्जायते काम:

९. भोग-चिन्तन होने से होता उत्पन्न
संग है,
संग से काम होता है, काम से क्रोध

कामात् क्रोध: अभिजायते ॥ भारत ।

१०. क्रोधात् भवति संमोह: संमोहात् स्मृतिविभ्रम: । स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाश: बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।।

१०. क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम , उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है।

(संस्कृत) (हिन्दी)

११. रागद्वेषवियुक्तै: तु विषयान् इन्द्रियै: चरन्। आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति ॥

११. रागद्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कार्य जो; स्वाधीन वृत्ति से पार्थ, पाता आत्मप्रसाद सो ।

१२. प्रसादे सर्वदु:खानां हानि: अस्य उपजायते । प्रसन्नचेतस: हि आशु बुद्धि: पर्यवतिष्ठते ॥

१२. प्रसाद-युत होने से छूटते सब दुःख हैं , होती प्रसन्नचेता की बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।

१३. न अस्ति बुद्धि: अयुक्तस्य न च अयुक्तस्य भावना । न च अभावयत: शान्ति: अशान्तस्य कुतः सुखम् ॥

१३. नहीं बुद्धि अयोगी के, भावना उसमें कहाँ , अभावन कहाँ शान्त, कैसे सुख अशान्त को ।

१४. इन्द्रियाणां हि चरतां

१४. मन जो दौड़ती पीछे इन्द्रियों के

यत् मन: अनुविधीयते ।
तद् अस्य हरति प्रज्ञां
वायुर् नावाम् इव अम्मसि ॥

विहार में—
खींचती जन की प्रज्ञा, जल में नाव
वायु ज्यों ।

१५. तस्माद् यस्य महाबाहो
निगृहीतानि सर्वश: ।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेभ्य: तस्य
प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।

१५. अतएव महाबाहो, इन्द्रियों को
समेट ले—
सर्वथा विषयों से जो, प्रज्ञा है
उसकी स्थिरा ।

१६. या निशा सर्वभूतानां तस्यां
जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा
पश्चत: मुने: ॥

१६. निशा जो सर्व भूतों की, संयमी
जागते वहाँ ,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्त्वज्ञ
की निशा ।

(संस्कृत) (हिन्दी)

१७. आपूर्यमाणम् अचलप्रतिष्ठम्
समुद्रम् आप: प्रविशन्ति तद्वत् ।
तद्वत् कामा: यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिम् आप्नोति न
कामकामी ।।

१७. नदी-नदों से भरता हुआ भी
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ
त्यों काम सारे जिसमें समावें ,
पाता वही शान्ति, न काम-कामी ।

१८. विहाय कामान् य: सर्वान्
पुमान् चरति निःस्पृहः ।
निर्मम: निरहङ्.कार:
स: शान्तिम् अधिगच्छति ।।

१८. सर्व-काम परित्यागी विचरे नर
निःस्पृह ,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम
शान्ति सो ।

१९. एषा ब्राह्मी स्थिति: पार्थ
न एनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थितवा अस्याम् अन्तकाले अपि
ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति ।।

१९. ब्राह्मी-स्थिति यही पार्थ, इसे पाके
न मोह है ,
टिकती अन्त में भी है ब्रह्मनिर्वाण-
दायिनी ।

(प्रात: की भाँति ही सायंकालीन प्रार्थना में भी स्थितप्रज्ञ-लक्षण के बाद नाम-माला, नाम-धुन और एकादश-व्रत का पाठ किया जाता है ।)

•

नाम माला

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।

सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू॥

ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु पिता प्रभु तू।

रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥

वासुदेव गो विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।

अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्म-लिंग शिव तू॥

नामधुन-

नारायण नारायण जय गोविन्द हरे।

नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

एकादश-व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।

शरीर-श्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥

सर्वधर्म-समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।

विनम्र व्रत-निष्ठा से ये एकादश देव्य हैं।।

सर्वधर्म-प्रार्थना

सर्वधर्म-प्रार्थना में मुख्य-मुख्य धर्म जैसे—वैदिक, ताओ, जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई तथा सिख धर्म की उपासना है -

वैदिक प्रार्थना

ले जा असत्य से सत्य के प्रति ,
ले जा तम से ज्योति के प्रति ,
मृत्यु से ले जा अमृत के प्रति ॥

चलें साथ औ बोलें साथ,
दिल से हिल-मिल जियें साथ,
अच्छे कर्म करें हम साथ,
बैठ के साथ भजें हम नाथ ।।

हों संकल्प समान-समान ,
हों जन-जन के हृदय समान ,
सबके मन में भाव समान ,
निश्चय सम हो, कार्य समान ॥

ताओ प्रार्थना

सद्व्यवहार करेंगे मुझसे,
उनसे सद्व्यवहार करूँ ।
दुर्व्यवहार करें उनसे भी ,
मैं तो सद्व्यवहार करूँ ॥
दुर्जज को सज्जन करने का ,
सदाचार उपचार है ।
द्वेष, क्रोध को पिघलाने का,
सही तरीका प्यार है ॥

जैन प्रार्थना

क्षमा मैं चाहता सबसे ,
मैं भी सबको करूँ क्षमा ।
मेत्री मेरी सभी से हो,
किसी से वैर हो नहीं ।।

बौद्ध प्रार्थना

जीतो अक्रोध से क्रोध,
साधुत्व से असाधु को ।

कंजूसी दान से जीते,
सत्य से झूठवादी को ॥
वैर से न कदापि भी,
मिटते वैर हैं कहीं ।
मैत्री ही से मिटे वैर ,
यही धर्म सनातन ॥

मुस्लिम प्रार्थना

दयावान को करूँ प्रणाम ,
कृपावान को करूँ प्रणाम ।।

विश्व सकल का मालिक तू ,
अन्तिम दिन का चालक तू ।

तेरी भक्ति करूँ सदा ,
तेरी पूजा करूँ सदा ॥

दिखा हमें तू सीधी राह,
तेजी जिन पर रहम निगाह ।

ऐसों की जो सीधी राह,
दिखा हमें वह सीधी राह ॥

जिन पर करता है तू क्रोध,

भ्रमित हुए, या हैं गुमराह ।

उनके पथ का लूँ नहीं नाम ,

दयावान को करूँ प्रणाम ।।

इसाई प्रार्थना

शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ,

प्रभु शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ,

हो तिरस्कार जहाँ, करूँ नेह ,

हो हमला तो क्षमा करूँ मैं ॥

शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ,

प्रभु, शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ।।

हो जहाँ भेद, अभेद करूँ ,

हो जहाँ भूल, मैं सत्य करूँ ।

शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ,

प्रभु, शान्ति का वाद्य बना तू मुझे ।।

हो सन्देह वहाँ विश्वास,
घोर निराश वहाँ करूँ आश।

शान्ति का वाद्य बना तू मुझे,
प्रभु, शान्ति का वाद्य बना तू मुझे।।

हो अँधियार वहाँ पै प्रकाश,
हो जहाँ दुःख उसे करूँ हास।

शान्ति का वाद्य बना तू मुझे,
प्रभु, शान्ति का वाद्य बना तू मुझे।।

सिख प्रार्थना

एकओंकारसतिनामु
करता पुरखु निरभउ निरवैरु।
अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुर प्रसादि॥
आदि सचु जुगादिसचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

एकादश-व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह ।
शरीर-श्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्म-समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना ।
विनम्र व्रत-निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं ॥

ॐ शान्ति: शान्ति:शन्ति:

•

श्रीपरमात्मने नमः

॥ अथ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।

विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।

अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय पुरुषोत्तमाय ॥

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥

योगो योगविदांनेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवःपुरुषोत्तमः ॥३॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥६॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥७ ॥

ईशानः प्राणदः प्राणों ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भोंभूगर्भों माधवो मधुसूदनः ॥८॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ १०॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥१२॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥१३॥

सर्वगः सर्वविभ्दानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥१४ ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दष्ट्रश्चतुर्भुजः।।१५।।

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥१६॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमों यमः।।१७।।

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहों महाबलः ॥१८ ॥

महाबृद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९ ॥

महेष्वासो महीमर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥२०॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१॥

अमृत्युः सर्वदृक सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः ।
अजोदुर्मर्षणःशास्ताविश्रुतात्मासुरारिहा ॥२२॥

गुरुर्गुरुतमो धामः सत्यःसत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्त्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ।।२३॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्त्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ॥२४ ॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तकी वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५ ॥

सुप्रसादःप्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥२६॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥२७॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोवरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मीमहेन्द्रोवसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ २९॥

ओजस्तेंजोद्युतिधरःप्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धःस्पष्टाक्षरोमन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥

अमृतांशूभ्दवो भानुः शशविन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतःसेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥३१॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहाकामकृत्कान्तःकामः कामप्रदःप्रभुः ॥३२॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्त्रजिदनन्तजित् ।।३३॥

इष्टोऽविशिष्टःशिष्टेष्टः शिखण्डीनहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥

अच्युतःप्रथितःप्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
आपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥३५॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहभ्दानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥३६।।

अशोकस्तारणस्तार: शूर: शौरिर्जनेश्वर: ।
अनुकूल: शतावर्त: पद्मी पद्मनिभेक्षण: ॥३७॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्ष:पद्मगर्भ:शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वज: ॥३८।।

अतुल: खरभो भीम: समयज्ञो हविर्हरि: ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जय: ॥३९॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदर: सह: ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशन: ॥४०॥

उभ्दव: क्षोभणो देव: श्रीगर्भ: परमेश्वर: ।
करणंकारणंकर्ता विकर्तागहनो गुह: ॥४१॥

व्यवसायो व्यवस्थान: संस्थान: स्थानदो ध्रुव: ।
परर्द्धि: परमस्पष्टस्तुष्ट: पुष्ठ: शुभेक्षण: ।।४२॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयोनयोऽनय: ।
वीर: शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तम: ॥ ४३॥

वैकुण्ठ: पुरुष: प्राण: प्राणद:प्रणव: पृथु: ।
हिरण्यगर्भ: शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षज: ॥ ४४ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रःसंवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ।। ४५।।

विस्तारःस्थावरःस्थाणुःप्रमाण बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६॥

अनिर्विण्णःस्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपीमहामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समहीनः ॥४७॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥४८॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदःसुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ।।४९।।

स्वापनःस्ववशोव्यापीनैकात्मानैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्त्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥

गभस्तिनेभिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥५२॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्य: पुरातन: ।
शरीरभूतभृध्दोक्ता कपीन्द्रोभूरिदक्षिण: ॥५३॥

सोमपोऽमृतप: सोम: पुरुजित्पुरुसत्तम: ।
विनयोजय:सत्यसन्धोदाशाई: सात्वतां पति: ॥५४॥

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रम: ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मामहोदधिशयोऽन्तक: ॥५५।।

अजोमहार्ह:स्वाभाव्योजितामित्र: प्रमोदन: ।
आनन्दो नन्दनो नन्द: सत्यधर्मात्रिविक्रम: ॥५६॥

महर्षि: कपिलाचार्य: कृतज्ञो मेदिनीपति: ।
त्रिमदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृङ्गःकृतान्तकृत् ।।५७।।

महावराहो गोविन्द: सुषेण: कनकाङ्गदी ।
गह्यो गभीरो गहनोगुप्तश्चक्रगदाधर: ॥५८ ॥

वेधा:स्वाङ्गोऽजित:कृष्णोदृढ़: संकर्षणोऽच्युत: ।
वरुणो वारुणो वृक्ष: पुष्कराक्षो महामना: ॥५९॥

भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुध: ।
आदित्योजेतिरादित्य: सहिष्णुर्गतिसत्तम: ॥६०॥

सुधन्वाखण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रद: ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिज: ।।६१॥

त्रिसामा सामग: साम निर्वाणंभेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छम: शान्तोनिष्ठा शान्तिऽपरायणम् ॥६२॥

शुभाङ्गः शान्तिद:स्त्रष्टा कुमुद:कुवलेशय: ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रिय: ॥६३॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिव: ।
श्रीवत्सवक्षा:श्रीवास: श्रीपति: श्रीमतां वर: ॥६४॥

श्रीद: श्रीश: श्रीनिवास: श्रीनिधि:श्रीविभावन: ।
श्रीधर: श्रीकर: श्रेय: श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रय: ।। ६५।।

स्वक्ष: स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वर: ।
विजितात्माविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशय: ॥६६।।

उदीर्ण: सर्वतश्चक्षुरनीश: शाश्वतस्थिर: ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोक: शोकनाशन: ॥६७॥

अर्चिष्मानर्चित:कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधन: ।
अनिरुद्धोऽप्रातिरथ: प्रद्युम्नोऽमितविक्रम: ।। ६८।।

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मात्रिलोकेश:केशवः केशिहाहरिः ॥६९॥

कामदेव:कामपाल:कामीकान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुवीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥७०॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्माविवर्धनः ।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥७१॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥७२॥

स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोत्रंस्तुतिःस्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ।।७३॥

मनोजवस्तीर्थकरोवसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवोवसुर्वसुमना हविः ॥७४॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सभ्दूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठःसन्निवासः सुयामुनः ।।७५।।

भूतवासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहादर्पदो दृप्तोदुर्धरोऽथापराजितः ॥७६।।

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७।।

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो धृताशीरचलश्चलः ॥७९।।

अमानी मानदो मान्योलोकस्वामीत्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०॥

तेजोवृषोद्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहोव्यग्रो नैकशृङ्गोगदाग्रजः ॥८१॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्माचतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥८३॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मामहाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ।।८४॥

उभ्दव: सुन्दर: सुन्दो रत्ननाभ:सुलोचन: ।
अर्को वाजसन:शृङ्गी जयन्त:सर्वविज्जयी ॥८५॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य: सर्ववागीश्वरेश्वर: ।
महाह्रद्रो महागर्तो महाभूतो महानिधि: ॥८६॥

कुमुद: कुन्दर: कुन्दःपर्जन्य:पावनोऽनिल: ।
अमृताशोऽमृतवपु: सर्वज्ञ: सर्वतोमुख: ॥८७॥

सुलभ: सुव्रत: सिद्ध: शत्रुजिच्छत्रुतापन: ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदन:॥ ८८॥

सहस्त्रार्चि: सप्तजिह्व: सप्तैधा: सप्तवाहन: ।
अमूर्तिरनधोऽचिन्त्यो भयकृभ्दयनाशन: ॥८९॥

अणुर्बृहत्कृश: स्थूलो गुणभृत्रिर्गुणो महान् ।
अधृत:स्वधृत:स्वास्य:प्राग्वंशो वंशवर्द्धन: ॥९०॥

भारभृत्कथितो योगी योगीश: सर्वकामद: ।
आश्रम: श्रमण: क्षाम: सुपर्णो वायुवाहन: ॥९१॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दम: ।
अपराजित:सर्वसहोनियन्तानियमो यम: ॥९२॥

सत्त्ववान्सात्त्विक:सत्य: सत्यधर्मपरायण: ।

अभिप्राय:प्रियार्होऽर्ह: प्रियकृत्प्रीतिवर्धन: ।।९३॥

विहायसगतिर्ज्योति: सुरुचिर्हुतभुग्विभु: ।

रविर्विरोचन:सूर्य: सविता रविलोचन: ॥९४॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रज: ।

अनिर्विण्ण:सदामर्षी लोकाधिष्ठानमभ्दुत: ॥ ९५ ॥

सनात्सनातनतम: कपिल: कपिरप्यय: ।

स्वस्तिद:स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिण: ।।९६॥

अरौद्र: कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासन: ।

शब्दातिग: शब्दसह: शिशिर: शर्वरीकर: ॥९७॥

अक्रूर:पेशलोदक्षोदक्षिण: क्षमिणांवर: ।

विद्वत्तमो वीतभय: पुण्यश्रवणकीर्तन: ।।९८॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशन: ।

वीरहा रक्षण: सन्तो जीवन: पर्यवस्थित: ॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापह: ।

चतुरस्रो : गभीरात्मा विदिशोव्यादिशो दिश: ॥१००॥

अनादिर्भूभुवो लक्ष्मी: सुवीरो रुचिराङ्गद: ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रम: ।। १०१।।

आधारनिलयो धाता पुष्पहास: प्रजागर: ।
ऊर्ध्वग: सत्यपथाचार: प्राणद:प्रणव:पण: ॥ १०२॥

प्रमाणं प्राणनिलय: प्राणभृत्प्राणजीवन: ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्माजन्ममृत्युजरातिग: ।।१०३।।

भूर्भुव: स्वस्तरुस्तार: सविता प्रपितामह: ।
यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वायज्ञाङ्गो यज्ञवाहन: ।। १०४।।

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञीयज्ञभुग्यज्ञसाधन: ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ।। १०५ ।।

आत्मयोनि: स्वयंजातो वैखान: सामगायन: ।
देवकीनन्दन: स्त्रष्टा क्षितीश: पापनाशन: ॥१०६।।

शड्.खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधर: ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य: सर्वप्रहरणायुध: ।। १०७।।

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ।। १०८ ।।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये

सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्त्रानाम्ने पुरुषाय शाश्वते

सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥

आकाशात् पतितं तोयं

यथा गच्छति सागरम् ।

सर्वदेवनमस्कारः

केशवंप्रति गच्छति ॥

•

रामायण पाठ

काम कोह मद मान न मोहा ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
जिन्हकें कपट दम्भ नहिं माया ।
तिन्हके हृदय बसहु रघुराया ॥

सबके प्रिय, सबके हितकारी ।
दुख-सुख सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ।
जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥
तुमहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं ।
राम बसहु तिन्हके मन माहीं ॥
जननी-सम जानहिं परनारी ।
धनु पराव विषतें विष भारी ॥
जे हरषहिं परसंपति देखी ।
दुखित होहिं पर-बिपति बिसेषी ॥
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पिआरे ।
तिन्हकें मन सुभ सदन तुम्हारे ॥

स्वामी सखा पितु मातु गुरु, जिन्हकें सब तुम्ह तात ।
मन-मन्दिर तिन्हके बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥

सुनहु सखा, कह कृपानिधाना ।
जेहिं जय होइ, सो स्यन्दन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा, पताका ॥
बल बिबेक दम परहित घोरे ।
छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईसभजनु सारथी सुजाना ।
बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परमु बुद्धि सक्ति प्रचण्डा ।
वर विग्यान कठिन कोदण्डा ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना ।
सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद विप्र-गुरु-पूजा ।
एहि सम विजय-उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके ।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
महा अजय संसार-रिपु, जीति सकइ सो बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मति-धीर ॥

भजन

(१)

वैष्णव जन तो तेने कहीए, जो पीड़ पराई जाणे रे ,
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।

सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे ,
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे ।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे ,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ।

मोह-माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे ,
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे ।

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवारया रे ,
भणे नरसैयो तेनु दरसन करतां, कुळ एकोतेर तायरि ।

(२)

दीनन दुख-हरन देव, सन्तन हितकारी ॥
अजामील गीध व्याध, इनमें कही कौन साध ।
पंछीको पद पढ़ात, गणिका-सी तारी ॥१॥

ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रह्लाद को उबार लेत ।
भक्त हेत बाँध्यो सेत, लंक-पुरी जारी ॥२॥

तंदुल देत रीझ जात, साग-पातसों अघात ।
गिनत नहिं जूठे फल, खाटे मीठे खारी ॥३॥

गजको जब ग्राह ग्रस्यो, दुःशासन चीर खस्यो ।
सभा बीच कृष्ण-कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥४॥

इतने हरि आय गये, बसनन आरूढ़ भये ।
सूरदास द्वारे ठाढो, आँधरो भिखारी ॥५॥

(३)

प्रभु ! मोरे अवगुण चित न धरो ।
सम-दरशी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥

एक नदिया एक नार कहावत, मैलो ही नीर भर्‌यो ।
जब मिल करके एक बरन भये, सुरसरि नाम पर्‌यो ॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक पर्‌यो ।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रमजाल कहावत, सूरदास सगरो ।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो ॥

(४)

दर्शन दे घनश्याम नाथ मेरी अखियाँ प्यासी रे।
मन-मन्दिर की ज्योति जला दो, घट-घट वासी रे॥
मन्दिर-मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी।
युग बीते न आई मिलन की पूरनमासी रे॥
द्वार दया का जब तू खोले, पंचम स्वर में गूँगा बोले।
अंधा देखे, लँगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे॥
पानी पी-पी प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ।
आँखमिचौनी छोड़ो अब तो, ओ घट-बासी रे॥

•

गीत

(१)

गलत मत कदम उठाओ

गलत मत कदम उठाओ,
सोच कर चलो, विचार कर चलो,
राह की मुसीबतों से प्यार कर चलो।
तुम पै जिम्मेदारियाँ मुल्क की पड़ीं,
तुम न बदलो चाल अपनी अब घड़ी-घड़ी,
तुम पै आनेवाली आशा की नजर गड़ी,
चिरागलेचलो, आग ले चलो,
मस्तियों में रंग भरी फाग ले चलो ॥१॥

रहो होशियार हमेशा, न तुम डरो,
दरिया-आसमान-पहाड़ों को सर करो,
जहान की तरक्कियों के वास्ते मरो,
आवाज करेगा,साज करेगा,
तुम्हारी वीरता पै जहाँ नाज करेगा ॥२॥

दूर किनारे रहे, न मिले या शिखर,
मंजिल के मुसाफिर तुम्हें क्या राह की फिकर,

चट्टान तू, तूफान के झोंकों का क्या जिकर,
अँधेरा जा रहा, दिन है कि आ रहा,
वो कौन मंजिलों पै मंजिलें उठा रहा ॥३॥

जिन्दगी बेकार मरना इल्जामहै,
काम में लगे रहो, यही 'आराम' है,
नहीं तो पानी भी यहाँ पीना हराम है;
बझो न बात में, हो ध्येय साथ में,
गिरे को उठाने की हो ताकत भी हाथ में ॥४॥

काल की करवाल से इन्सान कब डरा,
तू प्रलय के बादलों को छोड़ तो जरा,
लाख मौत हो मगर मनुष्य कब मरा,
ज्योत जो जला, पंथ जो चला,
प्रेम का पला, भला, वो सूर्य कब ढला ॥५॥

(२)

हिम्मत से पतवार सँभालो

त्याग और प्रेम के पथ पर चलकर मूल न कोई हारा ।
हिम्मत से पतावार सँभालो फिर क्या दूर किनारा
ओ माझी, फिर क्या दूर किनारा ॥

हो जो नहीं अनुकूल हवा तो परवा उसकी मत कर ,
मौजों से टकराता बढ़ चल, उठ माझी साहस धर ।
कुड़ पड़े या आँधी आये, उमड़ पड़े जलधारा ॥
हिम्मत . . .

दरियाओं की छाती पर था तूने होश संभाला ,
लहरों की थपकी से सोया तूफानों ने पाला ।
जी भर खेला खेल भँवर में, जीवन मस्त गुजारा ।।
हिम्मत . . .

हाथ लगे पतवार तो पकड़े खेल खेवइया लंगर ,
मदद मलाओं की करता आया है मस्त कलंदर ।
जान हथेली पर रख तून लाखों को है तारा ॥।
हिम्मत . . .

(३)

हम तरुण हैं हिन्द के

हम तरुण हैं हिन्द के, हम खेलते अङ्गार से ।
लड़ते नहीं हथियार से डरते नहीं तलवार से ।
हम जीतते हैं प्यार से ।
हम तरुण हैं हिन्द के . . .

आँधियों के बीच में रहें निमंत्रण दे रहीं ।
लाख पथ रोके बवंडर हम तो ना कहते नहीं ।
हम खेवैया नाव ले जाते सदा मझधार से ।
हम तरुण हैं हिन्द के . . .

चाँद-सूरज और सितारे लाख ये ढलते रहे ।
जिन्दगी के कारवाँ चलते रहे चलते रहे ।
कौन है मुझको बुलाता क्षितिज के उस पार से ॥
हम तरुण हैं हिन्द के . . .

मुक्ति का ले मन्त्र मेरे देश में गांधी बढ़ा ।
सत्य का संग्राम सबने त्याग के बल पर लड़ा ।
क्रान्ति की ज्वाला कभी बुझती नहीं फफकार से ।।

हम तरुण हैं हिन्द के . . .

किरण की जलती मशालें और चन्दा का दिया ।
भाल विस्तृत है गगन-सा और धरती-सा हिया ।
प्रेम का पंछी कभी लौटा न खाली द्वार से ॥
हम तरुण हैं हिन्द के . . .

•

जैन प्रार्थना

मैत्री-भाव जगत में मेरा सब जीवों पर नित्य रहे ,
दीन-दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा-स्रोत बहे ।
दुर्जन, क्रूर, कुमार्ग रतों पर क्षोभ नहीं मुझको आये ,
साम्यभाव रक्खुं मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे ॥

•

WE SHALL OVERCOME

We shall overcome,

We shall overcome,

We shall overcome some day.

O ! deep in my heart

I do believe that

We shall overcome some day.

We'll walk hand in hand,

We'll walk hand in hand,

We'll walk hand in hand some day.

We shall overcome,

We shall overcome,

We shall overcome some day.

We shall live in peace,

We shall live in peace,

We shall live in peace some day.

O !' deep in my heart

I do believe that

We shall overcome some day.

The truth will make us free,

The truth will make us free,

The truth will make us free some day.

O ! deep in my heart

I do believe that

We shall overcome some day.

We are not afraid

We are not afraid

We are not afraid today.

O! deep in my heart

I do believe that

We shall overcome some day.

Black and white together,

Black and white together,

Black and white together now.

O! deep in my heart

I do believe that

We shall overcome some day.

— *Freedom song based on Negro spiritual*

* * * * *